अर्घ्य उसी चांद को

(कहानी संकलन)

कुसुम नारायणी

मनसा पब्लिकेशन्स
२/२५६ विराम खण्ड गोमती नगर लखनऊ-२२६०१०

पुस्तक	:	अर्घ्य उसी चांद को
प्रकाशक	:	**मनसा पब्लिकेशन्स** २/२५६, विराम खण्ड गोमती नगर, लखनऊ–२२६०१० फोन–0522- 4029598
संस्करण	:	प्रथम (२००५), द्वितीय (२००७)
सर्वाधिकार	:	प्रकाशक
मुद्रक	:	क्षितिज कम्प्यूटर आर्ट, सी–१४७,सेक्टर–बी, अलीगंज, लखनऊ.
मूल्य	:	125.00 रुपये

ARGHYA USHI CHAND KO

समर्पण

प्रेरणा स्रोत पूज्य पिता,
स्वर्गीय श्री रमाशंकर सिंह
को, जो यथार्थ के तूफानों
में भी,आदर्शों की पतवार
सदैव थामे रहे।

अर्घ्य उसी चांद को

चांद की झलक जल्दी से जल्दी पा जाने को लोग आतुर हो रहे थे। कोई अपनी छत पर बारबार चक्कर लगा रहा था तो कुछ लोग थोड़ी देर बाद सड़क पर निकलते, चालीस–पचास गज आगे बढ़ कर देखते और फिर केवल इतना कह कर रह जाते कि अभी तो चांद का कहीं नामनिशान तक नहीं दिखाई दे रहा है! इसी प्रकार कोई अपने बरामदे से झांकता तो कोई सिर्फ खिड़की से ही। जिस को जितनी ही उतावली होती, वह उतना ही कष्ट उठाता। और लोग कष्ट उठाते भी क्यों न! उन की पत्नियों ने दिन भर से निर्जल व्रत किया था। सुहाग का व्रत, पति की उमर की कामना का व्रत। पति लोग एक दूसरे को चिंतित होते हुए देखते, धीरे से मुसकरा उठते, आगे बढ़ते और मन ही मन गर्व का अनुभव करते। किसी किसी के दिल में आता, केवल उसी की पत्नी उसे इतना चाहती है। कोई सोचता, क्या वह खुद भी पत्नी के लिए कोई व्रत कर सकता है? कुछ ऐसे भी पति थे जिन को न पत्नी के मुरझाए चेहरे की चिंता थी, न उस के प्यार की। वे लोग जल्दी से जल्दी चांद निकलने की सूचना दे कर अपने कर्तव्य से बरी हो जाना चाहते थे।

बच्चे भी चांद को खोज निकालने के पुनीत काम में किसी से पीछे न थे। चांद को देख कर ही तो पूजा की समाप्ति होगी। पूजा के बाद मिलने वाली मिठाइयों का मोह उन्हें भी दौड़ा रहा था। कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्होंने किसी ऊंचाई पर से आते प्रकाश को चांद के प्रकाश की संज्ञा दे कर अर्घ्य देने की घोषणा कर दी थी।

चार मंजिले फ्लैटों की कतारें आमने–सामने, आगे–पीछे चारों ओर थीं। असीम अपने फ्लैट पर, जो तीसरी मंजिल पर था, दौड़ता हुआ पहुंचा

और बोला, "मणि, अब जल्दी करो, बस चांद निकलने ही वाला है। शायद निकल भी चुका है। देखो तो, उजियारा फैलने लगा है।"

उसे मणि को देख कर हर्ष हुआ। जरी के चौड़े किनारे की लाल साड़ी में सजी मणि पूजा की तैयारी कर रही थी जड़ाऊ आभूषण बिजली के प्रकाश में दमक रहे थे। जब उस ने दीप जलाना शुरू किया तो प्रकाश में उसका सौंदर्य दो गुना हो उठा। आज उस ने सिंदूर से पूरी मांग भरी थी। कांच की नई चूड़ियां हाथों में चमक रही थीं। करवे के ऊपर दीप रख कर उस ने आंखें ऊपर की तो सामने असीम को खड़ा पाया। सुंदर, स्वस्थ, मुसकराता हुआ असीम। इसी रूप को आंखों में, हृदय में भरते हुए उस ने हाथ जोड़ कर अक्षय सुहाग की कामना की।

व्रत उपवास, पूजापाठ में असीम की कभी कोई रुचि न थी। जब बचपन था, तब इतनी ही प्रसन्नता होती कि अलग–अलग व्रतों, अलग–अलग पर्वों के दिन मां भिन्न–भिन्न प्रकार के व्यंजन बनाती। जैसे–जैसे वह बड़ा हुआ, उसके मन में यह जानने की जिज्ञासा कम होती गई कि आज कौन सा पर्व है या कौन सा उपवास है। उसे मां की बनाई चीजों से ही पता लगा जाता था।

धीरे–धीरे स्कूल से कालिज में जाने पर उसे यह सब व्यर्थ, शरीर को कष्ट देने वाला लगने लगा और मां जब अपनी बीमारी में भी व्रत वगैरा न छोड़ती तो वह न केवल विरोध ही करता बल्कि नाराज भी होने लगता। यही नहीं वह धीरे–धीरे व्रतों के फल को लेकर परिहास भी करने लगा। वह कहता, पंडितों के अनुसार जब एक ही व्रत से इतना फल मिल जाता है तो जिंदगी भर व्रत करने की क्या आवश्यकता है, मां? वह विचित्र प्रश्न करता, "जब एक व्रत छोड़ देने से शरीर को इतना कष्ट उठाना पड़ेगा तो शेष व्रतों का फल कब काम आएगा?" ब्राह्मणों और पंडितों के पाखंड देखते–देखते उसे इतनी चिढ़ हो गई कि उन्हें दान के नाम पर कुछ देना व्यर्थ लगने लगा।

असीम करवे को पूजती नारी को, अपनी मणि को, मुग्ध हो कर देख रहा था। वह इतनी सुंदर, इतनी पवित्र लग रही थी, मानो उस प्रेममूर्ति से दिव्य ज्योति निकल कर समूचे स्थान को आलोकित कर रही हो। पूजा

करते हुए वह मानो स्वयं प्रेम की पावन मूर्ति बन गई हो। असीम होठों पर मुसकान लिए मौन बैठा देख रहा था।

मणि ने करवे को अर्घ्य दिया, उसकी परिक्रमा की और फिर चंद्र देवता को अर्घ्य देने उठी। चांद सामने ही था। घर के सामने बड़ा सा नीम का पेड़ था जिसकी शाखें बरामदे तक फैली हुई थीं। बरामदे के एक ओर मनीप्लांट की बड़ी सी बेल फैली हुई थी। छज्जे के ऊपर गमलों में कैक्टस थे। उस के बीच से चांद चित्रलिखित सा दिखाई दे रहा था। पूजा की थाली में लोटे में जल लिए मणि आगे बढ़ी। थाली को गमले के पास रखते हुए उस ने चंद्र देवता को अक्षतपुष्प अर्पित किए और फिर अर्घ्य देने के लिए लोटे को उठाया। अब तक मौन और मुग्ध बैठा हुआ असीम कह उठा, "देखो, कौन सी जगह है वह शांतिसागर..."

"शांतिसागर...कहां?"

चतुर्थी के चांद की ओर संकेत करते हुए असीम ने कहा, "देखो, शायद थोड़ा सा भाग दिख रहा है। बताओ, वह कौन सी जगह है? शांतिसागर ही तो नहीं है, जहां आर्मस्ट्रांग..."

"ओह!" मणि के होंठों पर हास्य झलका और फिर नाराजगी से उस ने कहा, "अच्छा, देखो, पूजा में विघ्न न डालो!"

असीम ने विनम्र हो कर क्षमा मांगने का अभिनय किया लेकिन मणि का हृदय हाहाकार कर उठा। वह करवा चौथ ही की तो घटना थी। उस ने इसी तरह श्रृंगार किया था। मेंहदी रचे हाथों से अर्घ्य देने की तैयारी कर रही थी, तभी उस के स्नेही देवर ने परिहास करते हुए पूछा था, 'भाभी, क्या जब चांद पर आदमी पहुंच जाएगा तब भी आप चांद की इसी भांति पूजा करेंगी? चांद को देवता मानती रहेंगी?'

मणि भी हंस पड़ी थी। 'अमित, मैं तो जानती हूं, चांद कोई देवता नहीं। पूजा तो मैं केवल मांजी के कहने से कर रही हूं। नहीं तो कहेंगी कि लड़के तो नास्तिक थे ही, बहू को भी अपने जैसा बना दिया। मैं तो तुम्हें और तुम्हारे भैया को उनके कोप से बचाने के लिए ही व्रत और पूजा कर रही हूं। मेरी इस में कोई श्रद्धा नहीं।'

अमित की मां किसी काम से उठ कर गई थीं। वह खुद सुहाग खो

चुकी थीं इसलिए पूजा नहीं करती थीं। उन को आते देखा तो मणि को शरारत सूझी, 'मां, देखिए, अमित पूजा में विघ्न डाल रहे हैं, अर्घ्य नहीं देने देते, कह रहे हैं कि चांद तो हमारी पृथ्वी की ही भांति...'

अमित को झिड़क दिया था मां ने 'तुम हट जाओ, मणि को पूजा करने दो। सुहाग के व्रत में बोलबाल कर विघ्न मत डालो।'

अमित तो हट गया था लेकिन...

मणि का ध्यान पूजा में था ही कहां! वह तो बारबार द्दड़कते हृदय से असित के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। कल ही तो पत्र मिला था, असित एक महीने की छुट्टियां ले कर घर आ रहा है और मणि के आग्रह के अनुसार ठीक उस समय घर पहुंचेगा जब मणि पूजा कर रही होगी।

प्रतीक्षा करते–करते मणि ने पूजा कुछ देर से ही शुरू की थी। अब भी प्रत्येक आहट असित की पग ध्वनि बन रही थी। अमित भाई को लेने स्टेशन जाने लगा था तो मणि ने ही मना किया था, 'स्टेशन पर देर हो गई तो मैं यहां अकेली ही रह जाऊंगी।'

अक्षय सुहाग की कामना करते–करते ही उसे सूचना मिली थी कि उसकी मांग का सिंदूर सदा–सदा के लिए मिट गया है। तब रोते–रोते मेंहदी रचे हाथों से ही उसने सुहाग के चिह्नों को हटाया था।

कितनी कठोर यातना में बीते थे, तीन वर्ष, चंचल मणि के अद्दरों पर न कभी मुसकराहट की रेखा आई, न कभी नयनजल ही सूख सका। हृदयपट पर पति का चित्र अंकित किए उसकी कामना यही रही कि वह उसी से जा मिले, पर ऐसा करना सहज न हो पाया था। परिवार के लोग उसे एक क्षण भी अकेला न छोड़ते थे।

असित का अभिन्न मित्र था असीम। मैत्री का निर्वाह करने की चाह में उस ने खुद का समर्पण कर देना ही उचित समझा। जिस समय असित का एक्सीडेंट हुआ था, वह विदेश में था। एक वर्ष बाद आया तो मणि के पास संवेदना प्रकट करने गया था। कुछ समय बाद असीम का तबादला भी दिल्ली में ही हो गया। मित्रता के नाते वह बराबर मणि से मिलता रहा। उसे आगे पढ़ने की, कुछ करने की सलाह दी। लेकिन मणि तो इतनी गुमसुम हो चुकी थी कि उसे कुछ सूझता ही न था। असीम घंटों मणि के समीप

बैठा रहता।

अंत में उस ने मणि को सुखी बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया। अभी तक अपने धर्मभीरू मातापिता की अस्वीकृति का ध्यान उसे रोक रहा था। असीम ने असित के एक पुराने पत्र में उसी की लिखाई की नकल करते हुए लिखा– 'मुझे लगता है, मैं अधिक दिन रहने वाला नहीं हूं, यदि यह सब हो तो तुम मणि का हाथ थाम लेना...'

इस पत्र को दिखा कर उसने अपने मातापिता से तो स्वीकृति ले ही ली, मणि के घर के लोग भी प्रसन्न हो गए कि पुनर्विवाह हो जाने से मणि का खुशियों भरा जीवन लौट आएगा। मणि के सास और देवर भी कम सुखी नहीं हुए जिन के लिए दुखी मणि को निभाना एक समस्या बन गई थी। दिन, महीने और वर्ष बीते। असीम ने धीरज से काम लिया और मणि को अपना लिया।

विवाह के बाद आज पहली करवा चौथ है। किसी भी व्रतउपवास से चिढ़ने वाले असीम ने स्वयं ही क्यों कहा "मणि, कल क्या तुम व्रत करोगी?"

इसे मणि न समझ सकी। मणि के लिए यह दिन कितना दुखद हो गया था, इसे वही जानती है। पर आज वह क्या करे? वह सोच रही थी, 'क्या असीम यह देखना चाहता है कि मुझे उस से पूरा लगाव है या मेरे हृदय में अभी दूसरे का स्थान है? दूसरे का स्थान!... दूसरा क्यों?' असीम इतना निश्छल प्रेम से परिपूर्ण हृदय दे कर क्या यह चाहेगा कि अभी भी उसके हृदय में दूसरे का स्थान रहे या वह जानना चाहता है कि रसभरे जीवन में फिर लौट कर उसके मित्र को वह भूल तो नहीं गई है? विगत का शोक आज प्यार होगा या प्यार की छलना होगी?

दरअसल असीम ने केवल सहज भाव से पूछा था। आसपास के घरों से उसने करवाचौथ की बात सुनी थी और आज एक करवे वाले को देख कर उसे याद आ गया था कि मां कितने उत्साह से यह व्रत किया करती थीं। कभी भक्तिभाव से स्वयं चंद्रदेव को प्रणाम किया था, कभी परिहास किया था, कभी असह्य सिरदर्द से व्याकुल मां पर खीझा था। वह कैसे भूल सकता था आज का दिन!

असित का एक्सीडेंट इसी दिन हुआ था। यही दिन मणि के वैधव्य की स्मृति बन गया था। इसी स्मृति को दूर करने के लिए, उसके दुख को भुला देने के लिए कि वह भी सब सुहागिनों की तरह सहज हो कर रहे, वह कह उठा था, "मणि कल क्या तुम व्रत करोगी?"

मणि ने हृदय में उठते भावों पर संयम का पत्थर डाल दिया था। असीम की आंखों में संशय नहीं अनुराग छलक रहा था। मणि ने आंखों से छलकते अमृत को पीते हुए मौन स्वीकृति दी थी और व्रत की तैयारी में लग गई थी।

'विघ्न' कहते हुए मणि ने अपने होंठों को जोर से दबा लिया। ऐसा ही तो उस ने कहा था जब अक्षय सुहाग की कामना से चंद्र को अर्घ्य देने जा रही थी, तब परिहास किया था क्योंकि श्रद्धा न थी, लेकिन आज? निराशा की गहन अंधेरी रात्रि में भटकते हुए जब एकाएक सूर्य निकल आया था तब असीम के असीम अनुराग में वह पूरी तरह से डूब गई थी, असित का अस्तित्व नहीं रह गया था। जीवन के अंधेरे दिनों का स्मरण कर वह अपने सुख के सूर्य को ज्योतिवान रखने के लिए प्रयत्नशील है। सिंदूर से उसकी मांग भरी रही, हाथ में कांच की चूड़ियां छनकती रहतीं, पैरों में बिछुए चमकते रहते।

लेकिन वह करवाचौथ, यह अक्षय सुहाग का व्रत! उसका सुहाग अक्षुण्ण कहां रहा है? क्या इस के लिए भी कोई विधान है?

पर विधान वह कहां से पाए? सैकड़ों वर्षों से, जब से इसके विषय में जाना जा सकता है, क्या एक बार सुहाग खो कर किसी ने अक्षय सुहाग कहने का उपक्रम किया होगा, क्या यह मंगलव्रत उस जैसों के लिए है!

"असीम, चांद चाहे पृथ्वी जैसा ही क्यों न हो, क्या हम पृथ्वी को माता कह कर नहीं पुकारते? क्या हम सरिताओं की गंगा–यमुना, कृष्णागोदावरी में एक रूप की प्रतिष्ठापना कर उनकी पूजा नहीं करते?"

वह मंगलव्रत उस के लिए है या नहीं, यह सोच अर्घ्य के लिए उठता हुआ हाथ स्थिर हो गया था। भावनाओं का ज्वार उसे समेटे ले रहा था। वह क्यों नहीं एक ही पुरुष के प्रति निष्ठावान रह पाई? क्यों नहीं जीवन के सुखों का परित्याग कर वैरागिनी बनी? वह आंखें बंद किए मूर्तिवत खड़ी

यह बात सोच रही थी।

दोचार क्षण ऐसे ही बीते थे। असीम सोच रहा था, 'शायद यह आंखें मूंद कर कुछ प्रार्थना कर रही होगी।' उसे अपने ऊपर खेद हुआ था, 'जब खुद ही पूजा के लिए प्रेरित किया तो इस समय परिहास करना उचित नहीं है। फिर मुझ जैसे व्यक्ति को, जिसे ध्रर्म का कुछ भी ज्ञान नहीं, परिहास का यों भी तो कोई अध्रिकार नहीं है।'

असीम उठ कर उस के समीप आ खड़ा हुआ। आहट पा कर मणि ने देखा। चांद काफी ऊपर आ गया था। सामने उसके जीवन का चंद्र असीम खड़ा था, प्रेम का प्रकाश फैलाता हुआ। वह सोचने लगी, 'अब कुछ भी हो, यही मेरा सुहाग है, यही मेरा जीवन है, इसी की मंगल कामना करनी है।' व्रत के अनुसार उस ने उसी चांद को अर्घ्य दिया, उसी चांद की पूजा अर्चना की जिस का स्पर्श मानव ने कर लिया है, जो देवता नहीं, जो रहस्यमय नहीं...

अर्घ्य का जल दोचार खारी बूंदों ने बढ़ा दिया था।

●

सहयात्री

अपने गन्तव्य की ओर गाड़ी सरकने लगी है, ध्रीरे से सरकते हुये गति पकड़ लेती है मैं मन ही मन आनन्दित हूं बहुत दिनों से रामेश्वरम् महावलिपुरम, मदुरै, तंजौर, चिदम्बरम और कन्याकुमारी देखने की कामना जो पूरी हो गई है।

मैं चुपचाप कम्पार्टमेण्ट में सहयात्रियों का निरीक्षण करती हूं फिर बाहर देखने लगती हूं सोचती हूं सर्दियों के दिन मध्य दिसम्बर, कितना सुहाना है यहां, स्वेटर शाल का भार नहीं कहां उत्तर भारत की कटकटाती ठंड कितना विपरीत है मौसम! सागर का गर्जन फिर नारियल सुपारी झाऊ की पृष्ठभूमि में शस्यश्यामल लहलहाते ध्रान के खेत–काजू कटहल केले के बगीचे और कृष्णा कावेरी की ध्रारा...

मेरे सोच को ब्रेक लगा

सामने ऊपर की बर्थ पर लेटे किशोर के हाथ से एक पुस्तक गिर पड़ी है मैं उठा लेती हूं उसके फैले हाथ में देते–देते मुख पृष्ठ पर लिखा नाम पढ़ लेती हूं एम.जी. अनन्तशयनम्–

"ध्रन्यवाद आंटी जी" उसने मुझे अभिवादन करते हुए कहा। मैं मुस्करा दी हूं, फिर अपनी उपलब्धियों का विश्लेषण करने में लीन जो जाती हूं। क्या देखा, क्या छूट गया। ध्रर्म, इतिहास, साहित्य, संस्कृति जितना जानती थी उस दृष्टि से सोच है।

मेरे पास बैठे लोग, सभी तामिल तेलगू भाषी हैं। अतः मैं आत्मविभोर बैठी हूं। जाने कितना समय बीत गया।

"आंटी, काफी पियेगीं?"

मेरी तन्द्रा टूटी–